



# दैनिक संपादकीय विश्लेषण

## विषय

---

आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 का  
यथार्थवादी मूल्यांकन

---

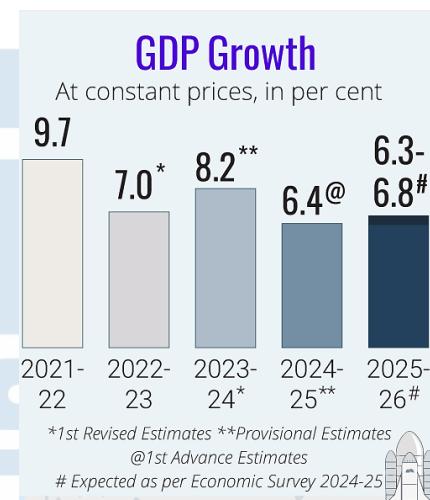
## आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 का यथार्थवादी मूल्यांकन

### संदर्भ

- आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर का अनुमान लगाया गया है, जो भारत की आर्थिक प्रगति का व्यापक और यथार्थवादी आकलन प्रस्तुत करता है।
- यह पूर्वानुमान वर्तमान आर्थिक स्थितियों और वैश्विक अनिश्चितताओं पर आधारित है, जो भविष्य के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

### अर्थव्यवस्था की स्थिति (आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25)

- वित्त वर्ष 2025 में भारत की वास्तविक GDP और वास्तविक सकल मूल्य वर्धित (GVA) वृद्धि 6.4% रहने का अनुमान है (राष्ट्रीय आय के पहले अग्रिम अनुमानों के अनुसार), जो लगभग इसके दशकीय औसत के बराबर है।
- विकास के उत्तर-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए, वित्त वर्ष 2026 में वास्तविक GDP वृद्धि 6.3 से 6.8% के बीच रहने की संभावना है।
- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के पहले अग्रिम अनुमान के अनुसार, चालू वित्त वर्ष की वृद्धि दर लगभग 6.4% रहने की संभावना है, जो आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24) के निचले स्तर 6.5-7% के अनुमान के अनुरूप है।
  - वैश्विक अर्थव्यवस्था 2023 में औसतन 3.3% की दर से बढ़ेगी, जबकि IMF ने आगामी पाँच वर्षों में 3.2% की वृद्धि का अनुमान लगाया है।
- वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बावजूद, भारत की अर्थव्यवस्था की स्थिर विकास दर बनी रहने की संभावना है तथा यह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और एशियाई विकास बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं के पूर्वानुमानों के अनुरूप रहेगी, दोनों ही 7% की विकास दर की आशा कर रहे हैं।
  - सर्वेक्षण में भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने तथा दीर्घकालिक विकास को बनाए रखने के लिए विनियमन-मुक्ति उपायों को लागू करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।



### भारत के लिए मूल्यांकन और रणनीतिक सिफारिशें (आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25)

- विकसित भारत@2047 के लिए:** भारत को आगामी दो दशकों तक 8% की विकास दर बनाए रखने की आवश्यकता है। इसका तात्पर्य है कि भारत को विकास दर में 1.5-2 प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी।
  - जैसा कि आर्थिक सर्वेक्षण में सही कहा गया है, उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत में निवेश दर को वर्तमान सकल घरेलू उत्पाद के 31% से बढ़ाकर लगभग 35% करने की आवश्यकता होगी।
  - इसके लिए बुनियादी ढाँचे में महत्त्वपूर्ण निवेश और कारोबारी माहौल में सुधार के लिए निरंतर सुधार की आवश्यकता है।

- **विनियामक सुधार और व्यापार करने में सुलभता:** सर्वेक्षण में व्यापार करने में आसानी (EoDB) को बढ़ाने और विनियमन को प्राथमिक आर्थिक विषय के रूप में स्थापित करने का मजबूत मामला बनाया गया है।
  - यद्यपि केन्द्र और राज्य सरकारों ने विनियामक बाधाओं को कम करने के लिए कदम उठाए हैं, फिर भी अभी बहुत कार्य किया जाना बाकी है।
  - एक प्रमुख सिफारिश यह है कि EoDB 2.0 एक राज्य-नेतृत्व वाली पहल होनी चाहिए जो कारोबारी वातावरण में मूलभूत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करे। राज्य भूमि अधिग्रहण, श्रम कानून, रसद और बुनियादी ढाँचे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को विनियमित करते हैं।
- **FDI और FPI पर:** प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) के हालिया रुझान बताते हैं कि निवेश अंतर को समाप्त करने के लिए विदेशी बचत पर निर्भर रहना व्यवहार्य नहीं हो सकता है।
  - सर्वेक्षण में चेतावनी दी गई है कि यदि पूँजी प्रवाह पर अंकुश लगा रहा तो चालू खाता घाटे का सतत स्तर सकल घरेलू उत्पाद के 2.5-3% की व्यापक रूप से स्वीकृत सीमा से कम हो सकता है।
  - परिणामस्वरूप, घरेलू बचत को बढ़ावा देना तथा सरकारी बचत में कमी लाना अनिवार्य हो जाता है।
- **वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियां और व्यापार नीति:** 21वीं सदी के प्रथम दो दशकों की तुलना में मध्यम अवधि का वैश्विक विकास परिवर्त्य कमजोर प्रतीत होता है।
  - भू-राजनीतिक तनाव और विखंडन तथा चीन की विनिर्माण क्षमता भारत की विकास गति को बाधित कर सकती है, विशेष रूप से निर्यात के क्षेत्र में - एक ऐसा क्षेत्र जिसमें भारत पारंपरिक रूप से पिछड़ा हुआ है।
  - आर्थिक सर्वेक्षण में सुझाव दिया गया है कि यदि टैरिफ को रणनीतिक रूप से लागू किया जाए तो इससे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है।
- **मुद्रास्फीति और असमानता:** प्रभावी प्रशासनिक और मौद्रिक नीतियों के कारण खुदरा मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 23 में 6.7% से घटकर वित्त वर्ष 24 में 5.4% हो गई।
  - सर्वेक्षण में आय असमानता पर ध्यान दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि शीर्ष 1% भारतीय कुल आय का 6-7% कमाते हैं, जबकि शीर्ष 10% के पास एक तिहाई हिस्सा है।
  - सरकार का लक्ष्य रोजगारों का सृजन, अनौपचारिक क्षेत्र को औपचारिक बनाना, तथा महिला श्रम शक्ति की भागीदारी को बढ़ाकर इस समस्या से निपटना है।
- **रोजगार:** सर्वेक्षण में इस बात पर बल दिया गया है कि भारत को बढ़ते कार्यबल को समायोजित करने के लिए 2030 तक प्रतिवर्ष लगभग 7.85 मिलियन गैर-कृषि रोजगार सृजित करने की आवश्यकता है।
  - इसमें बताया गया है कि लगभग आधे भारतीय स्नातकों को तुरंत रोजगार नहीं मिल पाता, जिससे कौशल विकास की आवश्यकता पर बल मिलता है।

## निष्कर्ष और आगे की राह

- आशावाद और सतर्कता का संतुलन:** आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 में विकास की संभावनाओं को मान्यता दी गई है, साथ ही आगे आने वाली चुनौतियों को भी स्वीकार किया गया है।
  - सर्वेक्षण की सिफारिशों संबूद्धि सहित सतत विकास और वैश्विक आर्थिक आघातों के प्रति लचीलेपन पर केंद्रित हैं।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2025 भारत के विकास पथ का यथार्थवादी आकलन प्रस्तुत करता है, जिसमें आशावाद के साथ सतर्कता का संतुलन भी है। यह चुनौतियों और अवसरों दोनों को संबोधित करते हुए सतत आर्थिक विकास के लिए एक रोडमैप प्रदान करता है।
- जैसे-जैसे भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था की जटिलताओं से निपट रहा है, सर्वेक्षण से प्राप्त अंतर्दृष्टि और सिफारिशों देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण होंगी।

Source: BS

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न.** आर्थिक सर्वेक्षण 2025 में भारत के विकास पथ का यथार्थवादी आकलन सतत आर्थिक विकास प्राप्त करने में चुनौतियों और अवसरों को किस प्रकार संबोधित करता है?

हिन्दी